RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

राष्ट्र राज्य की अवधारणा तथा राष्ट्र राज्य का शक्ति रचना दृश्य

Roshan Nain

PGT in political science, Govt Girl senior secondary school KALWAN(JIND)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
राष्ट्र राज्य, विदेश नीति, रीतिरिवाज, भाषा, धर्म।

ABSTRACT

जहाँ राष्ट्र व राज्य में एकरूपता हो वहां राष्ट्र राज्य विद्यमान होता है। राज्य जब राष्ट्र के अनुरूप होता है तो उसमें स्थायित्व व दृढ़ता पाई जाती है। भू–राजनीतिज्ञों के अनुसार राज्य राष्ट्र की राजनीतिक अभिव्यक्ति है जिसके रचनातंत्र में राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय रक्षा को अखण्ड बनाये रखा जाता है। राष्ट्र स्वाभाविक विकास की लम्बी यात्रा का परिणाम है जो रीतिरिवाज, भाषा, धर्म आदि की एकता से स्थापित हुआ है।

लगभग तीन शताब्दियों से भी अधिक समय में अन्तर्राष्ट्रीय जीवन के तरीकों से प्रभावित करने में एक सशक्त आधार की भूमिका निभाने का श्रेय जिसे जाता है उसे हम राज्य व्यवस्था कहते है। राज्य व्यवस्था को पाश्चात्य राज्य व्यवस्था, राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था तथा राष्ट्र राज्य व्यवस्था आदि विभिन्न संज्ञाओं से सम्बोधित किया जा सकता है।

शोध प्रविधि :–

इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए आंकड़े/तथ्य द्वितीयक स्त्रोतों से जुटाए गए हैं। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तर्क प्रस्तुत किए हैं जो शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा ज्ञान से प्राप्त किए है। ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

राज्य व्यवस्था के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ पामर और पर्किन्स ने कहा है कि राज्य व्यवस्था राजनैतिक जीवन का वह तरीका है जिसमें कि लोग सम्प्रभु राज्यों में पृथक रूप से संगठित हो जाते है। राज्य व्यवस्था की अपनी तीन प्रमुख विशेषताएं हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विभिन्न राज्यों के व्यवहार को संचालित, निर्देशित, नियंत्रित और प्रेरित करती हैं। इन तीन विशेषताओं में पहला राष्ट्रवाद का सिद्धान्त है जो राष्ट्र के लोगों को एकता के सूत्र में बांधता है और उन बातों का समर्थन करने के लिए उस देश के लोगों को प्रभावित करता है जिन्हें हम राष्ट्रीय हित कह सकते हैं। राज्य व्यवस्था की दूसरी विशेषता सम्प्रभुता की मान्यता है जो एक देश को उसके घरेलू मामलों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में एक असीमित शक्ति प्रदान करती है। राज्य व्यवस्था की तीसरी विशेषता राष्ट्रीय शक्ति का सिद्ध है। राष्ट्रीय शक्ति एक देश की ताकत होती है जिसके द्वारा राज्य को वह कार्य करने की क्षमता प्रदान की जाती है जिन्हें वह करना चाहता है। राज्य व्यवस्था की ये तीन प्रमुख विशेषताएं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की तीन आधारशिलायें हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि विश्व समाज का आधार राज्य अथवा यों कहिये कि राष्ट्र राज्य व्यवस्था है। अतः विश्व समाज, शान्ति, सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का प्रारम्भ वहीं से करना चाहिए।

प्रत्येक राष्ट्र का अपना राष्ट्रीय सम्मान होता है और इसी से जुड़े उसके अपने राष्ट्रीय हित होते हैं। अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए पहले तो वह शान्तिपूर्ण साधनों को अपनाता है किन्तु उनके प्रभावहीन सिद्ध होने पर वह विध्वंसक शक्ति, यहां तक कि युद्ध को भी अपना सकता है। हितों को लेकर उठने वाले विवाद ही राज्यों के बीच अधिकांशतः म्यान से तलवार निकालने या तलवार खड़खड़ाने का कारण बनते हैं। युद्ध का मार्ग अपनाने से राज्यों को कोई रोक भी नहीं सकता क्योंकि वे सम्प्रभुता सम्पन्न कोई भी निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र होते है। ध्यान रखने योग्य है कि शक्ति राज्य की उत्पत्ति में एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है। आदिम अवस्था में जो शक्तिशाली था, वह कमजोर पर बल प्रयोग द्वारा अपना प्रभाव जमा लेता था। लोग उसकी शक्ति के भय से उसकी भक्ति करने लगते थे।

राष्ट्र राज्य व्यवस्था से युद्ध, शान्ति, सुरक्षा और सशस्त्र सेनाओं का अस्तित्व बड़ी गहराई से जुड़ा हुआ है। अपने यूटोपिया में मूर ने युद्ध को गणतन्त्र के जीवन का सामान्य अंग माना है और इसलिए राज्य की अपनी संकल्पना में वह सशस्त्र सेनाओं को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। इसी कारण बेकन भी अपने "न्यू अटलांटिस" में सम्मानपूर्वक "बारूद और शास्त्रों के आविष्कारण भिक्षु" की मूर्ति स्थापित, करने वाले एक सैनिक राज्य का चित्र प्रस्तुत करता है। बेकन युद्ध को राष्ट्रीय गौरव का एक आवश्यक अंग मानता था और इसी कारण राज्य की अपनी संकल्पना में उसने राज्य की सशस्त्र सेनाओं को प्रमुख स्थान प्रदान किया। इटली के राजनीतिक विचारक मैक्यावेली ने तो खुले तौर पर यह घोषणा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

की थी कि युद्ध, इसके नियम और अनुशासन के अतिरिक्त किसी राजकुमार को कोई अन्य विषय न तो चुनना चाहिए और न ही अपने अध्ययन के लिए उसका कोई अन्य उद्देश्य या विचार होना चाहिए। 'द प्रिन्स' पुस्तक में वह स्पष्ट करता है कि "नए पुराने अथवा मिश्रित सभी राज्यों का मुख्य आधार अच्छे नियम और अच्छे शस्त्र है और चूँकि उपरोक्त के बिना पूर्वोक्त की प्राप्ति नहीं हो सकती, और जहां उपरोक्त होते हैं वहां पूर्वोक्त स्वयं आ जाते हैं, मैं नियमों की बात छोड़कर केवल शस्त्रों की विवेचना करूँगा।" हो सकता है कि मैक्यावेली ने सशस्त्र सेनाओं, उनके स्थान, स्थिति और कार्यों को अनावश्यक महत्व दे दिया हो परन्तु उसके युग की राजनीतिक स्थिति और उसके इस विचार–"संसार के सभी भविष्यवक्ता विजयी होते है केवल शस्त्रहीन भविष्यवक्ता पराजित होते है" को ध्यान में रखते हुए उसका राजय के भीतर और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में शक्ति एवं सुरक्षा की आवश्यकता का प्रतिपादन उचित ही था। कहा भी गया है अर्थात् युद्ध से राजा का जन्म होता है। स्पष्ट है कि शक्ति, संघर्ष, युद्ध तथा विजय सभी राष्ट्र राज्य के विकास के अनिवार्य तत्व रहे है।

शक्ति राष्ट्र राज्य का आधार है। शक्ति शून्य राष्ट्र राज्य अपना अस्तित्व ही कायम नहीं रख सकता। शक्ति राष्ट्र के मूर्त व अमूर्त संसाधनों को इस ढ़ंग से प्रयुक्त करने की क्षमता को कहते है जिससे अन्य राज्य के आचरण को प्रभावित किया जा सके। पाउण्ड्स के अनुसार राज्य के नीति निर्धारकों का शक्ति सम्पन्न होना आवश्यक है। इसके अभाव में वे अपना निर्णय क्रियान्वित करने की योग्यता खो बैठते हैं। एस.वी.जोन्स के अनुसार – "निर्णय लेने में भाग लेने हेतु जो अवसर प्रदान करे वही शक्ति है।" राजनीतिक शक्ति के दो रूप होते है–

1. आन्तरिक शक्ति।
2. बाह्य शक्ति।

आन्तरिक शक्ति के अन्तर्गत राज्य की निर्णय करने व उन्हें क्रियान्वित करने की योग्यता का समावेश होता है।

बाह्य शक्ति के अन्तर्गत निर्णय लेकर राज्य की सीमाओं के बाहर स्थित किसी भाग में या भागों में विरोधों के बावजूद अपने हित क्रियान्वित करने की योग्यता निहित होती है।

उल्लेखनीय है कि अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में शक्ति का संबंध क्षेत्र, जनसंख्या, संसाधन एवं राष्ट्र की औद्योगिक क्षमता से होता है जो भौगोलिक स्थिति एवं तकनीकि स्तर से परिवर्तित होती रहती है। इस दिशा में राजनीतिक शक्ति का आधार मुख्यतः भौगोलिक होता है। विदेशी अन्तर्सम्बन्धों में राज्य का प्रभाव राजनीतिक शक्ति पर आधारित होता है। राष्ट्र राज्य के आन्तरिक संगठन को सुदृढ़ बनाए रखने में, शक्ति को कायम रखने में, क्षेत्रीय अखण्डता, एकता और राष्ट्रीय शक्ति एवं चरित्र की वृद्धि में, क्षेत्र व सीमाओं पर नियंत्रण रखने में, उत्पादन वृद्धि में, उत्पादन के नवीन ढाँचे को प्रोत्साहित करने में, वर्तमान उत्पादन स्तर को नीचे न गिरने देने के प्रयत्नों में तथा इन सभी से बढ़कर राष्ट्र की राजनीतिक स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने व राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु शक्ति का होना एक अनिवार्य शर्त है।

राष्ट्र राज्य का शक्ति रचना दृश्य

किसी भी राष्ट्र राज्य की शक्ति का आधार मात्र भौतिक तत्व ही नहीं होते बल्कि समस्त उपलब्ध भौतिक एवं आध्यात्मिक स्त्रोत् संगठन इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। राष्ट्र राज्य की शक्ति संरचना में अनेक तत्वों का योगदान होता है। इन तत्वों का सामूहिक प्रभाव किसी राष्ट्र राज्य से पूर्ण रूपेण प्रभावी हो यह आवश्यक नहीं किन्तु इनके अभाव में राष्ट्र राज्य की शक्ति संरचना में निम्न कारकों का योगदान होता है–

1. प्राकृतिक सुविधाएं तथा संसाधन, 2. स्फूर्तिवान विविध जनसंख्या, 3. एक सर्वमान्य भाषा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, 4. धर्म, शिक्षा एवं सम्वाद की स्वतन्त्रता, 5. समुन्नत प्रौद्योगिकी, 6. पूँजीगत पदार्थ की साख, 7. सन्तुलित आर्थिक विकास, 8. सैन्य शक्ति, 9. आन्तरिक राजनीतिक स्थिरता, 10. राष्ट्रों से मैत्री संबंध।

किसी भी राष्ट्र राज्य की अवधारणा में हम प्राकृतिक वातावरण व प्रकृतिजन्य सुविधाओं के अभाव में न तो राष्ट्रीय शक्ति की कल्पना कर सकते हैं, न ही कल्याणकारी राज्य की अवधारण को मूर्त रूप दे सकते हैं।

यह प्रमाणित सत्य है कि भौगोलिक तत्व किसी राष्ट्र को शक्ति और सुरक्षा दोनों प्रदान करते हैं। भौगोलिक तत्वों में अवस्थिति, भू–आकृति, आकार एवं जलवायु का महत्वपूर्ण स्थान होता है। राष्ट्र की अवस्थिति के द्वारा ही विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के साथ शत्रुता और मित्रता के आधार पर स्थापित होते है। किसी राष्ट्र राज्य की विदेशी नीति से उसकी अवस्थिति का आपसी संबंध इतना बुनियादी है कि इससे भू–राजनीति का जन्म हुआ है जो यह मानती है कि किसी राष्ट्र राज्य की शक्ति की रचना और उसकी अभिवृद्धि उसके भूगोल के अनुसार होती है।

इसी प्रकार भू–आकृति भी राष्ट्र की शक्ति रचना में महत्वपूर्ण है। भू–आकृति जिन राष्ट्रों को बन्दरगाह आदि की सुविधा देती है वे राष्ट्र व्यापारिक सुविधाओं से वंचित रहती है वे अपने को दूसरों पर आश्रित रखने के अतिरिक्त स्वतन्त्र

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विदेश नीति का निर्णय करने तथा कूटनीतिक निर्णय लेने में अपने को असमर्थ पाते हैं।

इसी भांति जलवायु तथा अतुल खनिज शक्ति, भूमि और प्राणी जगत राष्ट्र राज्य की शक्ति संरचना के मूल तत्व हैं।

विश्व के अधिकांश राज्यों में जनसंख्या का घनत्व अलग–अलग है। राज्य विकास की प्रत्येक अवस्था में अनुकूलतम जनसंख्या का एक निश्चित घनत्व होता है। औद्योगिक विकास व जीवन स्तर की परिस्थितियों से कुछ राज्यों में घनत्व आवश्यकता से अधिक है तो कहीं आवश्यकता से भी कम।

जनसंख्या का संख्यात्मक पक्ष इतना सबल नहीं है कि जितना उसका गुणात्मक पक्ष। जिस राज्य में स्वस्थ, शिक्षित नागरिकों का प्रतिशत अधिक नहीं होगा वह शक्ति संरचना में अपने को अग्रणी नहीं बना सकता।

भाषा मात्र संचार का माध्यम ही नहीं है वरन् ऐसा साधन भी है जिससे ऐतिहासिक पश्चकाल की संस्कृति को वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाया जाता है। इसीलिए भाषा व परम्पराओं की भिन्नता राष्ट्रीय समस्या उत्पन्न करती है। जिन राज्य राष्ट्रों में इस तरह की भिन्नता है वहां राष्ट्र तभी दृढ़ता स्थापित कर सकते हैं जबकि वह एकता के सामान्य बन्धन स्थापित कर इसे निष्क्रिय बना देते है।

धर्म, शिक्षा एवं संवाद की एकता को राष्ट्र राज्य में जिस हद तक सुरक्षित व स्वतन्त्र रखा जाता है वह राष्ट्र राज्य की नैतिक शक्ति का माप है। शिक्षा, धर्म व सम्वाद को सांस्कृतिक एकता के हित में नियंत्रित करने के प्रयत्न विरोधाभास की दृष्टि से राज्य के सबसे बड़े विनाशक प्रयास साबित हुए है। राष्ट्र राज्य में शिक्षा, सम्वाद व बुद्धि वर्ग को जितनी अधिक स्वतंत्रता मिलेगी राष्ट्र राज्य में सांस्कृतिक विकास व प्रगति के अवसर उतने ही अधिक होंगे जो राज्य को शक्ति प्रदान करने के मापक्रम बनेंगे।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। नवीनतम प्रौद्योगिकी ने युद्ध व शान्ति दोनों में ही राष्ट्र राज्यों को महत्वपूर्ण निर्णय लेने में उत्कृष्ट भूमिका का निर्वाह किया है। जिस राष्ट्र या राज्य के पास जितनी अधिक उन्नत किस्म की प्रौद्योगिकी होगी वह उतना ही शक्तिशाली बनने या बने रहने की तुलना में सर्वथा जागरूक रहता है।

कुछ राष्ट्र राज्य पूँजीगत पदार्थों एवं मशीनी उपकरणों की दिशा में प्रगतिशील होते हैं तथा अन्य राज्यों की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में भी ऐसी ही भिन्नता देखने को मिलती है। उनकी पूँजीगत व उपभोक्ता राज्यो की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में भी ऐसी ही भिन्नता देखने को मिलती है। उनकी पूँजीगत व उपभोक्ता सामग्री का नियंत्रण भी भिन्न होता है। युद्ध के कारण कई राज्यों में महत्वपूर्ण सामग्री व्यापारिक विस्तार स्वतः ही अधिक हो जाता है और दूसरे राज्यों में यह घटकर न्यूनतम रह जाता है या समाप्त हो जाता है।

संतुलित आर्थिक विकास राज्य की प्राथमिक आवश्यकता एवं मुख्य उद्देश्य माना जाता है। सभी राष्ट्र राज्य सर्वदा से ही इस दिशा में अग्रसर रहे हैं और आज भी है। राष्ट्र राज्यों का सम्भाव्य औद्योगिक विकास मुख्यतः आर्थिक उपलब्धियों से ही नियंत्रित होता है और आर्थिक सन्तुलन की उचित परिस्थितियों पर अवलम्बित होता है।

सैन्य बल राष्ट्र राज्य की शक्ति, सुरक्षा तथा प्रतिष्ठा की दृष्टि से सदैव ही अग्रणी रहा है औश्र आज भी है। सैन्य बल के अभाव में शान्ति और सुरक्षा की कल्पना राष्ट्र राज्य नहीं कर सकते।

आन्तरिक राजनीतिक स्थिरता राष्ट्र राज्य की शक्ति का एक प्रमुख आधार तत्व है। युद्धकाल, आर्थिक संकट या आन्तरिक अस्थिरता के दौरान प्रशासन का पतन हो सकता है या विरोध के फलस्वरूप वह निर्बल या असहाय हो सकता है। इसके विपरीत राष्ट्र के आन्तरिक संगठन की दृढ़ता से राष्ट्र राज्य की शक्ति में वृद्धि होती है। विश्व राजनीति का यह नियम है कि उसी राष्ट्र राज्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है या सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है या पड़ोसी राष्ट्र अदब के साथ उसकी आवाज सुनते है जब उस राष्ट्र राज्य में आन्तरिक राजनैतिक स्थिरता हो।

सामान्य समय में और संकट की घड़ी में संबंधों में काफी अन्तर होता है। संकटकालीन परिस्थितियों में राष्ट्र राज्य के बाह्य संबंधों की परीक्षा होती है। यह राष्ट्र राज्य आज पारस्परिक सहयोग से अपनी आवश्यकता तथा युद्ध एवं शान्ति संबंधी चुनौतियों का सामना करने की ओर तेजी से अग्रसर हैं। यद्यपि गुटबन्दी बढ़ रही है फिर भी राष्ट्र राज्य के संबंध सूत्रों में अन्य राष्ट्रों से मैत्री संबंधी को प्राथमिकता दी जा रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था निरन्तर एक ऐसी व्यवस्था में परिवर्तित हो रही है जिसमें सैनिक तथा कार्यात्मक क्षेत्रीय सन्धियों की प्रधानता है। संचार में आयी संचार क्रान्ति ने राष्ट्र राज्यों के समाजों पर अत्यधिक बाहरी सांस्कृतिक प्रभाव डाला है। राष्ट्र राज्य व्यवस्था आज भी है, इसके शक्ति के अवयव भी सक्रिय है फिर भी इसमें पूर्व की अपेक्षा बदलाव आ गया है।

डॉ॰ हेनरी किर्सीजर के शब्दों में –

"हम राजनीतिक आचरण की पुरानी धारणाओं तथा राष्ट्र राज्यों की अपर्याप्तता तथा सार्वभौमिक समुदाय के बढ़ते हुए आदेशक स्वरूप के बीच एक पूर्णतया नई अवधारणा के मध्य खड़े हैं।"

सन्दर्भ सूची :

1 दीपक कोहली, जैविक हथियारों की घातकता एवं निवारण, प्रतियोगिता दर्पण, नई दिल्ली, जून 2008, पृ0 95.
2 पी.एस. जयरामू, इण्डियाज नेश्नल सिक्योरिटी एण्ड फॉरेन पॉलिसी, पूर्वोदृत, पृ० 90.
3 पन्त, पुष्पेश, ''21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'', मैग्राहिल एजुकेशन प्रा० लि०, नई दिल्ली, 2014
4 यादव आर० एस०, ''भारत की विदेश नीति'', पियर्सन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013
5 कुमार संजय, ''21वीं शताब्दी में भारत की सुरक्षा चुनौतियाँ'', महाबीर एण्ड सन्स पब्लिकेशनस, नई दिल्ली, 2007
6 वाजपेयी, अरूणादेय, ''समकालीन विश्व एवं भारत प्रमुख मुद्दे और चुनौतियाँ, पियर्सन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012
7 फडिया बी० एल०, ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'', साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2012
8 गर्ग सुषमा, ''अर्न्राष्ट्रीय राजनीति'', अग्रवाल पब्लिकेशनस, आगरा, 2014
9 अशोक कुमार सिंह : आधुनिक राज्य का रक्षातंत्र, पृ॰ 1
10 अशोक कुमार सिंह : राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम (भारतीय सन्दर्भ में), पृ॰ 110

RRIJM 2015, All Rights Reserved